B.A. III, Paper II
M.A. JOHN

प्रबल जाति
(Dominant Caste)

आम तौर पर यह धारणा पायी जाती है कि सवर्ण जाति ही प्रबल जाति होती है। पर धारणा सही नहीं है। किसी विशेष भूभाग में किसी जाति की जनसंख्या और उसका स्तर क्या है, प्रबल जाति की धारणा इसी पर आधारित है। किसी विशेष क्षेत्र में जिस जाति की संख्या अधिक होती है उस जाति का स्तर उस क्षेत्र के जाति संस्तरण में सर्वोपरि होता है। ऐसे अधिक जनसंख्या वाली जाति को ही प्रबल जाति का नाम दिया जाता है। उदाहरण के लिये किसी क्षेत्र में अगर कुरमी, यादव या जाट इत्यादि के संख्या अधिक होती है तो यही जातियाँ प्रबल जाति तथा सवर्ण जाति कही जाती है।

S.C. Dube के अनुसार "इन कारकों की एक संख्या की जटिल पारस्परिक क्रिया से हिन्दू समाज में एक जाति की श्रेणी निश्चित

करती हैं

M.N. Srinivas के अनुसार " यह इस तथ्य को स्वीकार करता है कि यानि सत्ता प्रत्येक स्थान पर ही स्थानीय कारकों से प्रभावित हुई है क्योंकि समय व्यतीत होने पर स्थानीय कारक बदल सकते हैं।

उपयुक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि प्रबल जाति वह जाति है जिसकी जनसंख्या किसी क्षेत्र में अधिक होती है इसलिये इसका स्तर अन्य जातियों से स्वयं ऊपर उठ जाता है चाहे ये कोई भी जाति हो। इनके हाथ से पानी लेने में कोई संकोच नहीं करता है। कुछ जातियाँ तो इनके यहाँ भोजन करने में भी नहीं हिचकिचाती हैं। स्वतन्त्रता के पश्चात प्रबल जाति के प्रभाव को उनके क्षेत्र में सरलता से देखा जा सकता है।

M.N. Srinivas ने इसकी परिभाषा इस प्रकार प्रस्तुत की है " कि एक जाति को प्रभु जाति तब कहा जाता है जब वो संख्या के आधार पर किसी गाँव अथवा स्थानीय क्षेत्र में शक्तिशाली हो तथा आर्थिक एवं राजनैतिक रूप से अपने प्रभाव का प्रबल रूप से

प्रबल रूप से प्रयोग करती हो। पर आवश्यक नहीं है कि परम्परागत जातीय संस्तरण में वह सर्वोच्च जाति के रूप में ही हो।"

Prof. Srinivas ने भारतीय गाँवों में किसी जाति के प्रबल होने के ये आधार बताये हैं।—

① उपलब्ध स्थानीय कृषि भूमि के एक बड़े भाग पर स्वामित्व होना।

② जाति की सदस्य संख्या का अधिक होना।

③ स्थानीय जातीय संस्तरण के आधार पर उस जाति का तुलनात्मक रूप से एक उच्च स्थान पर होना।

निर्धारक तत्व (determinants)

① भूस्वामित्व

② जनसंख्यात्मक शक्ति

③ जातीय संस्तरण में उच्च स्थान

④ आधुनिक शिक्षा

⑤ प्रशासनिक स्थिति

⑥ आर्थिक सम्पन्नता

⑦ विकास योजनाओं से लाभ की सीमा

⑧ राजनीतिक प्रभुत्व

Scanned with CamScanner